खेल और नेतृत्व: संस्था प्रधान की क्रियाशील योजना

लेखक : जयसिंह सिकरवार

राजस्थान स्कूल लीडरशिप अकादमी

सीमेट, जयपुर, राजस्थान

1. मॉड्यूल का विषय :-

"खेल और नेतृत्त्व: संस्था प्रधान की क्रियाशील योजना"

2. प्रस्तावना :-

संस्था प्रधान की नेतृत्त्व की समझ विद्यार्थी की समृद्धि और विद्यालय के विकास का माध्यम है। एक उत्कृष्ट विद्यालय उच्च गुणवत्ता और अनौपचारिक शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थियों के व्यक्तिगत विकास को प्रोत्साहित करता है। इसके लिए संस्था प्रधान का योजना बनाना और उसे सफलता से पूर्ण करना आवश्यक है। इस मोड्यूल का मुख्य उद्देश्य है विद्यार्थियों को उनकी क्षमताओं और प्रतिभाओं के आधार पर मार्गदर्शन प्रदान करना, ताकि हर विद्यार्थी अपने अद्वितीय विशिष्टताओं में समृद्धि कर सके।

एक कुशल संस्था प्रधान का कर्त्तव्य है कि वह अपने विद्यालय के विद्यार्थियों को यह सिखाएं कि वे कैसे अपनी शक्तियों का सही तरीके से उपयोग करें और अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कड़ी मेहनत करें।

उचित दिशा के अभाव में बालक में निहित विशिष्ट गुण शरारत में बदल जाते हैं। अत: संस्था प्रधान की जिम्मेदारी है कि वह अपने स्टाफ के सहयोग से बालकों की क्षमताओं को पहचानकर उन्हें सही मार्ग पर ले जा सके जिससे वे समाज में उपयोगी और सफल नागरिक बन सकें। संस्था प्रधान अपने कुशल नेतृत्त्व क्रियान्वयन से विद्यालय को एक सकारात्मक और सहयोगी वातावरण प्रदान करे, जिससे प्रत्येक विद्यार्थी अपनी प्रवृत्ति के अनुसार विकसित हो सके और समाज में अपने योगदान को साझा कर सके।

3. उद्देश्य :-

इस मोड्यूल के माध्यम से, हमारा प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों की दिशा में सकारात्मक परिवर्तन लाने का है, जिसे हम खेल के माध्यम से साधना चाहते हैं। संस्था प्रधान का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों की विशिष्टताओं को अद्वितीयता में मोड़ना है, ताकि वे समाज में सकारात्मक योगदान दे सकें।

खेल के माध्यम से विद्यार्थियों में अद्वितीय गुणों को विकसित करने के उद्देश्यों को निम्नानुसार अभिव्यक्त किया जा सकता है -

(1) **विद्यार्थियों की विशिष्टताओं को उचित दिशा प्रदान करना:** विद्यालय का मुख्य उद्देश्य है विद्यार्थियों के विशिष्ट गुणों की पहचान कर उनकी अद्वितीयता में सुधार करना। खेल के माध्यम से संस्था प्रधान द्वारा विद्यार्थियों को विभिन्न क्षेत्रों में उनके विशिष्ट गुणों को पहचान, स्वीकृति और उनके विकास को दिशा प्रदान करना है ताकि उनकी अद्वितीयता को उचित दिशा प्रदान करना है।

> *हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान और उनके विकास हेतु प्रयास करना।*
> *- मूलभूत सिद्धांत, पेज-6, NEP2020*

(2) **विद्यार्थियों के व्यक्तिगत विकास को प्रोत्साहित करना:** इस मोड्यूल का उद्देश्य विद्यार्थियों को उनकी रूचियों और प्रतिभाओं के प्रति समर्थन प्रदान करने का उद्देश्य रखते हैं, जिससे उनमें आत्मविश्वास और आत्मसमर्थन की भावना बढ़े।

(3) **अनुप्रायोगिक शिक्षा को समर्थन :** संस्था का लक्ष्य होता है विद्यार्थियों को अनुप्रायोगिक शिक्षा के माध्यम से सीखने को प्रोत्साहित करे। खेलों के जरिए, उनकी समस्याओं का समाधान निकाले, नेतृत्व कौशल विकसित करे और उनके व्यक्तित्त्व विकास में मार्गदर्शन प्रदान करें।

(4) **विद्यार्थियों को नैतिक मूल्यों का अध्ययन कर उनकी पारिवारिक सहभागिता के साथ सामाजिक समरसता बढ़ावा देना :** इस मोड्यूल के माध्यम से विद्यार्थियों को नैतिक मूल्यों, सामाजिक समरसता, और सामूहिक सहभागिता के महत्त्व के बारे में शिक्षा देकर उन्हें समृद्धि और सफलता की दिशा में मार्गदर्शन करने का प्रयास किया जा सकता है।

4. लीडरशिप की अवधारणा :-

संस्था प्रधान की लीडरशिप के महत्वपूर्ण गुण :-

"नेतृत्व एक ऐसी क्रिया है जो व्यक्तियों को इस प्रकार प्रभावित करे कि वे अपनी इच्छा से सामूहिक उद्देश्यों के लिए प्रयास करें।" "Leadership is an activity of influencing people to strive willingly for group objectives."

George R. Terry, 1954

अच्छे संस्था प्रधान की लीडरशिप के लिए कई महत्वपूर्ण गुण होते हैं। पहले, एक स्पष्ट दिशा देने की क्षमता और दृष्टिकोण का होना आवश्यक है। उनमें संगठनात्मक क्षमता होनी चाहिए जो योजना बनाने, प्रबंधित करने और लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करती है। संवाद कौशल और स्पष्टता उनके साथी कर्मचारियों के साथ सही संवाद करने में महत्वपूर्ण हैं। प्रेरणादायकता और सहयोग, संबल और समर्थन उन्हें अपने स्टाफ को प्रेरित करने और समर्थन देने में मदद करती है। समस्या समाधान कौशल और स्थिरता भी उनका महत्वपूर्ण गुण हैं। संघर्षशीलता, विश्वास, और समानुभूति उन्हें संघर्षों में समर्थ और संबल कायम रखने में मदद करते हैं। अंत में, समय प्रबंधन कौशल उन्हें महत्वपूर्ण कार्यों को समय पर पूरा करने में मदद करता है। इन गुणों के संयोजन से, एक अच्छा संस्था प्रधान अपने विद्यालय को सफलता की ऊंचाइयों तक ले जा सकता है।

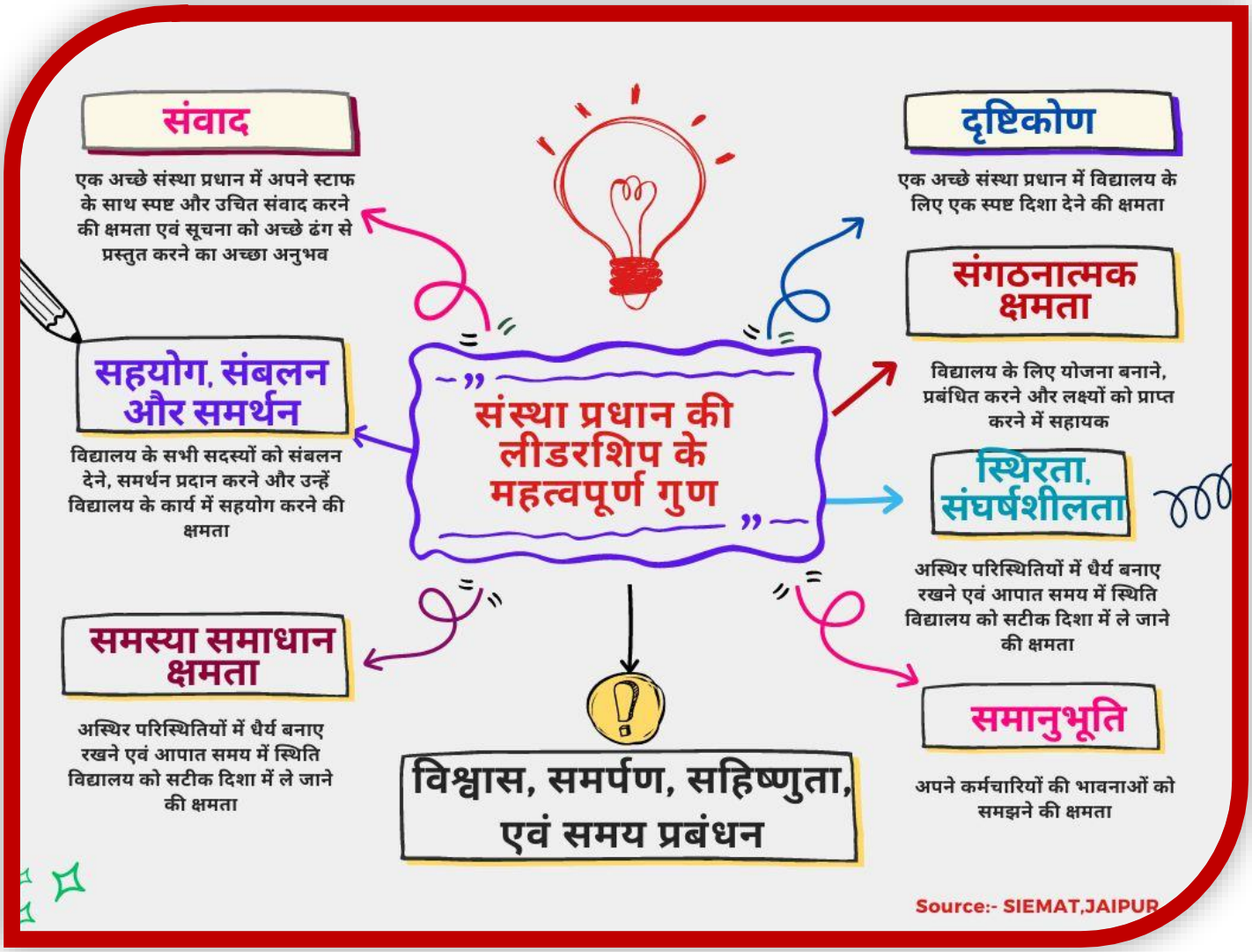

राजस्थान में खेल:- राजस्थान राज्य के विद्यालयी खेल प्रतियोगिताओं में 2021 से पूर्व पहले से 18 खेल शामिल थे, जिनमें जिम्नास्टिक, हैंडबॉल, हॉकी, जूड़ो, सोफ्टबॉल, तैराकी, वॉलीबॉल, बैडमिंटन, बास्केटबॉल, खो-खो, लोन टेनिस, टेबल टेनिस, कबड्डी, एथलेटिक्स, तीरंदाजी शामिल थे। 2021 के बाद ये 23 नए खेल जोड़े गए हैं फुटबॉल छात्रा, क्रिकेट छात्रा, कुश्ती छात्रा, टेनिट क्रिकेट, साइक्लिंग, ताइक्वांडो, बाल बैडमिंटन, बॉक्सिंग, स्पीड बॉल, शतरंज, नेटबॉल, थ्रो बॉल, रोल बॉल, कूडो, टेनिस वॉलीबाल, कराटे, आस्थे-दा-अखाड़ा वूशू, मलखम्भ, सेपक टकरा, टग ऑफ वार, लगोरी (संतोलिया), सुपर सेवन क्रिकेट। इस तरह अब राजस्थान में 41 खेलों की प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं, जिनमें से प्रमुख खेल जिनमें राजस्थान का प्रदर्शन अभी तक अच्छा रहा है

5. चिंतन / मनन करने के प्रश्न

(1) विद्यार्थियों के विशिष्ट गुणों को पहचानने, उन्हें स्वीकृति प्रदान करने और उन्हें विकसित करने के लिए, संस्था प्रधान में किन-किन कौशलों की आवश्यकता होती है?
(2) विद्यार्थियों के अंदर छिपी प्रतिभा और संवेदनशीलता को संस्था प्रधान कैसे प्रोत्साहित कर सकते हैं ?
(3) विद्यार्थियों को उनके मन की दुर्बलताओं के बारे में संवेदनशीलता क्यों प्रदान की जाती है और इसका क्या महत्व है?
(4) विद्यार्थियों के साथ संवाद उनकी रुचि क्षेत्रों को पहचानने की प्रक्रिया में कैसे सहायक हो सकता है?
(5) विद्यार्थियों को सामाजिक, आत्मिक और शारीरिक रूप से स्वावलंबी बनाने के लिए किस प्रकार के नेतृत्त्व की आवश्यकता होती है?

प्रस्तुत मोडयूल के परिप्रेक्ष्य में लीडरशिप :

संस्था प्रधान की नेतृत्त्वशैली का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को शिक्षा के माध्यम से न केवल शिक्षात्मक योग्यता प्रदान करना होता है, बल्कि उन्हें उनकी विशिष्टताओं और क्षमताओं को पहचानने, स्वीकृति देने और विकसित करने का भी अवसर प्रदान करना होता है। इस प्रकार के नेतृत्त्व में, संस्था प्रधान विद्यार्थियों के साथ संवाद करते हुए उनके रुचि क्षेत्रों को पहचानता है और उनकी उन क्षमताओं को विकसित करने के लिए प्रेरित करता है जो उनमें अंतर्निहित हैं। वे शिक्षा को एक सामाजिक प्रक्रिया के रूप में देखते हैं, जिसमें विद्यार्थी अपनी स्वायत्तता को पहचानते हैं और स्वीकार करते हैं और संघर्षों का सामना करने के लिए साहसी बनते हैं। उनका उद्देश्य विद्यार्थियों के अंदर छिपी प्रतिभा और संवेदनशीलता को प्रोत्साहित करना होता है, जिससे वे अपने अद्वितीय पहलुओं को समझें और समाज में सक्रिय भूमिका निभाएं, जिससे वे खुद को स्थापित करने और अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित हो सकें।

6. केस स्टडी

केस स्टडी :1

मध्यावकाश में एक दिन मैं (प्रधानाचार्य) अपने कार्यालय से बाहर निकला तो देखा कि कुछ छोटे-छोटे बच्चे एक झुंड के रूप में दिखाई दिए पहले तो मैं समझा कि शायद कोई खेल या मजाक के मूड में होंगे, लेकिन अगले ही पल उनकी आवाज से अहसास हुआ कि वे झगड़ रहे हैं। मैं तुरंत ही अपने विद्यालय के शारीरिक शिक्षक जो कि मेरे पास ही थे उनको लेकर बच्चों के पास गया वहाँ जाकर देखा तो एक कौतूहल हुआ कि कक्षा-11 के एक छात्र के ऊपर कई छोटे-छोटे बच्चे जूझ रहे हैं वे छोटे-छोटे बच्चे उसके अगल-बगल ऊपर चारों तरफ लटक रहे थे और वह अकेला उन

सभी से बड़ी हिम्मत से जूझ रहा था हालांकि वह उन बच्चों से बड़ा था लेकिन उसके चेहरे पर कोई परेशानी के भाव नहीं थे। किसी तरह उन सभी बच्चों को शांत कर कक्षा-11 के उस बड़े से छात्र को मैं और मेरे शारीरिक शिक्षक जी कार्यालय में लेकर आये उसका नाम संदीप था। उससे झगड़े का कारण तो पूछा उसे उसकी कक्षा में भेज दिया। उसके बाद मेरे दिमाग में आया कि इस बच्चे के जुझारूपन, साहस और उसकी शक्ति को सही दिशा में मोड़ा जाये। अत: मैंने अपनी योजना अपने विद्यालय के शारीरिक शिक्षक को बताई और उस योजना के अनुसार बच्चों का एक समूह तैयार कर पिरामिड बनाने के लिए उस छात्र को तैयार किया, बड़ी मजेदार बात यह है कि इस पिरामिड में झगड़ने वाले दोनों पक्षों को एक साथ पिरामिड बनाने में शामिल किया और धीरे धीरे वे विद्यार्थी पिरामिड बनाने में दक्ष हो गए। संदीप की प्रतिभा ने धीरे-धीरे उन्हें एक प्रमुख कलाकार बना दिया।इसके साथ ही संदीप को हैण्डवाल की टीम में जोड़ा तो उसने विद्यालय की टीम को जिला स्तर पर विजेता बनाने में प्रमुख भूमिका का निर्वहन किया।

संदीप की शरारत की घटना ने उसकी जिंदगी को एक नया रंग दिया। उसकी प्रतिभा को पहचानकर, संस्था प्रधान एवं स्थानीय शारीरिक शिक्षक ने उसे और अन्य विद्यार्थियों को मार्ग प्रदान किया, जिसे उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था। इस केस स्टडी से हम एक सबक सीखते हैं कि कभी-कभी, हमारे सबसे अद्भुत और अनोखे गुण हमें हमारे असली पथ पर ले जाते हैं, जो हम पहले कभी नहीं सोचते थे, बशर्ते कि उन्हें उचित मार्गदर्शन एवं नेतृत्त्व मिले।

चिंतन प्रश्न :-

- क्या आपने अपने शारीरिक शिक्षक के साथ मिलकर किसी विद्यार्थी को खेल में आगे बढ़ाया है ?
- आपके द्वारा संदीप जैसे विद्यार्थी की प्रतिभा को क्या-क्या दिशा दी जा सकती है ?

केस स्टडी : 2

एक दिन मैं अपने घर से स्कूल के लिए जा रहा था कि रास्ते में मैंने एक छात्रा खुशी को उसकी साइकिल पर तीन छात्राओं को एक साथ बैठाकर ले जाते हुए देखा, मुझे आश्चर्य हुआ। प्रार्थना सभा में मैंने उस छात्रा को दुबारा पहचानकर अपने आपको सुनिश्चित किया कि यही छात्रा थी। प्रार्थना सभा पूर्ण हो जाने के बाद मैंने उस छात्रा को रोककर उससे बात की आप इतनी छात्राओं को एक साथ क्यों ला रहे थे ? तो छात्रा जो बोली उसे सुनकर आश्चर्य भी हुआ और थोडा सा दुःख भी हुआ। दुःख इसलिए हुआ कि वे छात्राएं पहाड़ी इलाके से कक्षा 7 में पढ़ने आती हैं और वह छात्रा अपनी बहनों में सबसे बड़ी है। आश्चर्य इसलिए हुआ कि उस छात्रा ने कहा कि, " उसका प्रयास रहता है कि वह ज्यादा से ज्यादा छात्राओं का सहयोग करअपने साथ पढ़ने के लिए ला सके। उसके ऐसे सहयोगी एवं परिश्रमी भाव को मैंने खेल में शामिल करने का संकल्प किया और मैंने इसे एथिलेटिक्स में भाग दिलवाने के लिए सोचा।

उसके बाद इस छात्रा को दौड़ाया तो देखा की उक्त बच्ची की तेज दौड़ तो औसतन है लेकिन उसके स्टेमना से

मुझे लगा कि इसे लम्बी दौड़ की तैयारी कराएं तो बेहतर होगा। उसके बाद उस छात्रा ने अभ्यास किया और उसने जिला स्तर पर दौड़ प्रतियोगिता की 1.5 और 3 किमी दौड़ में प्रथम स्थान प्राप्त किया उसके बाद उसने राज्य स्तर पर भी भाग लिया।

संस्था प्रधान के मार्गदर्शन से खुशी ने अपने उत्कृष्ट प्रदर्शनों से खिलाड़ी के रूप में सफलता हासिल की। इससे स्पष्ट होता है कि संस्था प्रधान की महत्वपूर्ण भूमिका एवं कुशल नेतृत्त्व ने कैसे एक छात्रा की विशिष्ट क्षमताओं को पहचानने और उसे सही दिशा में ले जाने में सहायता की है।

चिंतन प्रश्न :-

- क्या आपके जीवन में ऐसी कोई घटना घटित हुई है ?
- आपके द्वारा खुशी जैसी छात्रा की प्रतिभा को क्या-क्या दिशा दी जा सकती है ?

केस स्टडी -3

एक दिन मेरे पास कक्षा 9 का एक विद्यार्थी शिकायत लेकर आया उसने रोते हुए मुझसे कहा कि मुझे थप्पड़ मारा है मैंने देखा उसका गाल लाल हो रहा था मैं तुरंत उसके साथ उसकी कक्षा में गया और मैंने उससे पूछा कि किसने मारा

है तो उसने एक पतली काजल से लड़की के तरफ इशारा किया तो मैं लड़की के साहस को देखकर अवाक रह गया और मन ही मन मुझे हँसी आ रही थी, लेकिन कक्षा की मर्यादा के अनुसार मैंने अपने आपको हँसने से रोक लिया। मैं उस छात्रा को सभी के सामने दण्डित करने की बजाय कक्षा से बाहर लाया और उसे पूछा तो उसने बताया कि इस लड़के ने मेरे से अभद्र भाषा का प्रयोग किया है, इसलिए थप्पड़ मारा है। उसके बाद मैंने सोचा कि लड़की साहसी, अन्याय का प्रतिकार करने वाली है लेकिन इसके क्रोध को दिशा परिवर्तन की जरूरत है मैंने वहाँ के स्थानीय अध्यापक से उसके परिवार और अभिभावक की जानकरी ली तो पता चला उसके अभिभावकों की केस स्टडी के अनुसार मैंने उसे किसी ऐसे आक्रामक खेल में शामिल करने की सोचा जिसमें उसके क्रोध का उपयोग किया जा सके, उसके लिए मुझे कबड्डी और दौड़ दोनों खेल उपयुक्त लगे, चूँकि कबड्डी की टीम तैयार नहीं थी। अत: मैंने एक दिन उसको दौड़ाकर देखा तो उसने अच्छी दौड़ लगाई तब मैंने निश्चय किया कि एथलेटिक्स के क्षेत्र में ले जाना है।

उसके बाद उसके अभ्यास का सिलसिला चला और उसे टूर्नामेंट में कक्षा 9 -12 की छात्रा वर्ग में भाग लेने के लिए अपने विद्यालय के शारीरिक शिक्षक के साथ भेज दिया मैंने एक बार यह भी सोचा कि कक्षा 9-12 वर्ग में कक्षा 12 तक की इससे बड़ी-बड़ी छात्राएं आयेंगी लेकिन मुझे उसकी प्रतिभा पर भरोसा था, उसके हिसाब से उसे जिला स्तरीय टूर्नामेंट में प्रतिभागी बनाया और आश्चर्यजनक ढंग से उसने 400 मीटर और 800 मीटर दौड़ में जिला स्तर पर पहले प्रयास में ही प्रथम स्थान प्राप्त किया मेरी खुशी का ठिकाना न रहा मैंने छात्रा के सर पर बेटी की तरह आशीर्वाद देते हुए उसे शाबाशी दी। उसकी दौड़ का यह सफर वर्ष 2018 से 2019, 2021 तक जारी रहा।

संस्था प्रधान की पारखी नजर ने शारीरिक शिक्षक के सहयोग से काजल को उसके लक्ष्यों की प्राप्ति में मदद की है। उनके मार्गदर्शन और प्रेरणा ने काजल को उसके उच्चतम स्तर पर पहुंचने में मदद की है। उनके सहयोग ने उसके आत्मविश्वास को मजबूत किया है और उसे सही मार्ग पर चलने में मदद की है। उनके सामर्थ्यपूर्ण सहयोग ने छात्रा को एक सशक्त खिलाड़ी बनाने और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

संस्था प्रधान के कुशल नेतृत्त्व ने काजल के साहस, क्रोध और संघर्षशीलता को उचित दिशा में परिवर्तित सकारात्मक दिशा में ले जाने का प्रयास किया। उसने खेल में अद्वितीय प्रदर्शन करते हुए जिला एवं राज्य स्तर पर खड़ा होकर दिखाया कि कठिनाईयों को पार करना संभव है। उसने कबड्डी टीम को भी जिला स्तर पर द्वितीय स्थान प्राप्त कराया, जिससे उसका सामर्थ्य और उत्साह बढ़ा। उनकी उपलब्धियां एक सकारात्मक स्थिति का उदाहरण हैं, जो अन्य संस्था प्रधानों के नेतृत्त्व और विद्यार्थियों को प्रेरित कर सकती हैं।

चिंतन प्रश्न :-

- आपके द्वारा काजल जैसी छात्रा की प्रतिभा के समग्र विकास हेतु क्या दिशा दी जा सकती है ?

7. वीडियो लिंक:-

- https://www.youtube.com/watch?v=f3Q_A8YbhPc&feature=shared

8. संदर्भ (Refrence) _

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 , NCERT, नई दिल्ली
- शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबंधन , MAED 602, उत्तराखंड मुक्त विश्विद्यालय हल्द्वानी

Webliography :-

- http://ncsl.niepa.ac.in/sla-modules-2022-23.php
- https://www.ollusa.edu/blog/leadership-qualities.html
- https://www.integritycoaching.co.uk/blog/qualities/10-qualities/
- https://www.theguardian.com/teacher-network/teacher-blog/2013/sep/24/eight-qualities-successful-school-leaders

9. Frequently asked questions

1. केस स्टडी के अनुसार, छात्रा के क्रोध को दिशांतरित करने के लिए आप कौन-कौनसे कदम उठाते ?
2. आपके अनुसार नेतृत्त्व का मूल उद्देश्य क्या है और यह कैसे विद्यार्थियों के विकास में सहायक है?
3. आप कैसे विद्यार्थियों की विशिष्टताओं को पहचानते हैं और उन्हें विकसित करने के अवसर प्रदान करते हैं ?
4. क्या आपके विद्यालय से किसी विद्यार्थी ने राष्ट्रीय स्तर पर भाग लिया है ?
5. क्या आपके विद्यालय से किसी विद्यार्थी ने राज्य स्तर पर भाग लिया है ?
6. क्या आपके विद्यालय से विद्यार्थी प्रतिवर्ष खेल प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं ?

7. Quotation

- "वास्तविक नेतृत्व उस व्यक्ति की गुणवत्ता में छिपा होता है जो विद्यार्थियों को न केवल उत्कृष्ट बनाता है, बल्कि उनकी क्षमता को उचित दिशा प्रदान कर उन्हें अपनी सर्वोत्तम क्षमताओं के प्रयोग करने के अवसर प्रदान करता है।"

8. Task for principal

विद्यार्थियों की विशिष्टताओं को खेल के क्षेत्र में विकसित करने हेतु संस्था प्रधान के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य:-

विद्यालय के संस्था प्रधानों द्वारा विद्यार्थियों की विशिष्टताओं को पहचानने और उन्हें उनकी शक्तियों का परिचय कराने के लिए खेल का महत्व बहुत बड़ा होता है। यहाँ कुछ तरीके ऐसे दिए गए है, जिनके माध्यम से संस्था प्रधान विद्यार्थियों को विशेष अवसर प्रदान कर सकते हैं:

1. **विशेष कौशल का पहचान**: विशेष कौशल जैसे कि गतिशीलता, संघर्षों से जूझना, नेतृत्व, टीम वर्क, आदि की पहचान करें और उन्हें समर्थ बनाने के लिए अवसर प्रदान करें।
2. **साक्षात्कार और विश्लेषण**: विद्यार्थियों के साथ साक्षात्कार करें और उनके सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, और शैक्षिक प्रोफाइल का विश्लेषण करें। उनके द्वारा खेले जाने वाले खेल और उनके द्वारा प्रदर्शित कौशल के बारे में जानकारी प्राप्त करें।
3. **स्वास्थ्य और फिजिकल फिटनेस की जाँच**: विद्यार्थियों के स्वास्थ्य और फिजिकल फिटनेस का मूल्यांकन करें। यह उनकी शारीरिक क्षमताओं और रूचियों को समझने में मदद करेगा।
4. **खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन**: विद्यालय स्तर पर खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन करें, जिससे विद्यार्थियों को अलग-अलग खेलों में भाग लेने का अवसर मिले।
5. **उत्कृष्टता का पुरस्कार**: विशेष खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करें और उन्हें पुरस्कारों से सम्मानित करें।
6. **प्रशासनिक समर्थन**: विद्यार्थियों को खेल में प्रोत्साहित करने के लिए प्रशासनिक समर्थन प्रदान करें, जैसे कि अच्छी सुविधाएं, सामग्री, और प्रोत्साहन के रूप में पुरस्कार।
7. **खेल से संबंधित अध्ययन का समर्थन**: खेल से संबंधित अध्ययन के लिए समर्थन प्रदान करें, जैसे की विशेषज्ञ साक्षात्कार, खेल की पुस्तकों का संदर्भ, और खेल से संबंधित कोर्सेस आदि।

इन तरीकों से, विद्यालय संस्था प्रधान विद्यार्थियों को उनकी विशिष्टताओं के आधार पर अवसर प्रदान कर सकते हैं और उनकी सामर्थ्यों को विकसित करने में सहायता कर सकते हैं।